रात्रि क्लास 3/10/65 :– बादल आते हैं ज्ञान सागर पास बढ़ने(भरने) लिए, फिर वहाँ जाकर बरसते हैं। यहाँ पर जैसे कि ईश्वरीय घर में बैठे हो, वहाँ तो जैसे गोरख धंधा है। यहाँ तो सिर्फ अपने दैवी भाँति ही दिखलाई पड़ते हैं, वहाँ का तो वातावरण ही और है। देखते हो कि बरोबर भगवानुवाच्य ठीक है। नशा भी चढ़ता है कि सन्मुख बैठे हैं। सन्मुख और दूर में फर्क तो रहता है न। पहले थे आसुरी सम्प्रदाय, अभी है ईश्वरीय सम्प्रदाय, फिर शरीर छोड़ बनेंगे दैवी सम्प्रदाय। भक्तिमार्ग में सिर्फ महिमा करते हैं, यह थोड़े ही जानते कि किसकी महिमा करते हैं। क्रिश्चियन तो फिर भी जानते हैं कि हमारा धर्म पिता कौन है। भारतवासी तो इतना भी नहीं जानते और वह भी कहते हैं क्राइस्ट के 3000 वर्ष पहले हेविन था। वह भी सिर्फ कहने मात्र कहते हैं; लेकिन जानते तो वह भी नहीं; क्योंकि ज्ञान नेत्र हीन हैं। तुमको अभी ज्ञान–नेत्र मिले हैं। साधु–संत सब विपरीत बुद्धि हैं। तुम पाण्डवों की है प्रीत बुद्धि। तुम बाप से स्वर्ग का राज्य ले लेते हो, जो कोई छीन न सके। यह है डेविल राज्य। जानते हो, हम श्रीमत पर राज्य स्थापन करते हैं गुप्त रीति, और कोई जान न सके।